ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
# आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

त्वे विश्वे अमृता मादयन्ते। ऋग्वेद 1/59/1
हे परमेश्वर ! सब भक्त आपमें आनन्द पाते हैं।
**O God ! The devotes find peace & happiness in you alone.**

वर्ष 39, अंक 14 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 8 फरवरी, 2016 से रविवार 14 फरवरी, 2016
विक्रमी सम्वत् 2072 सृष्टि सम्वत् 1960853116
दयानन्दाब्द: 192 वार्षिक शुल्क: 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें- www.thearyasamaj.org/aryasandesh

## सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के संयुक्त तत्त्वावधान में

# आचार्य बलदेव जी को दी गई विनम्र श्रद्धांजलि

## त्याग और सौम्यता की प्रतिमूर्ति थे आचार्य बलदेव – महाशय धर्मपाल

## संगठन की जिम्मेदारियों के निर्वहन के प्रति सजग थे आचार्य जी – धर्मपाल आर्य

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान, वीतराग संन्यासी, गौ भक्त महर्षि दयानन्द के अनन्य शिष्य, गुरुकुल परंपरा के पोषक, वैदिक विद्वान आचार्य बलदेव जी का गत 28 जनवरी 2016 को दयानन्द मठ रोहतक में निधन हो गया। उनकी स्मृति में गुरुकुल कालवा में श्रद्धांजलि सभा हुई जिसमें सभा की ओर से श्री सुरेश चन्द्र आर्य, विनय आर्य एवं श्री धर्मपाल आर्य ने पहुंचकर विनम्र श्रद्धांजलि दी।

आचार्य बलदेव जी को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्य समाज हनुमान रोड में रविवार 7 फरवरी को सम्पन्न हुई। कार्यक्रम का प्रारंभ आर्यसमाज हनुमान रोड के धर्माचार्य डॉ. कर्णदेव शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ के साथ हुआ। श्रद्धांजलि सभा का संचालन सभा मंत्री श्री प्रकाश आर्य ने किया। उन्होंने आचार्य जी की विशेषताओं को स्मरण कराते हुए श्रद्धांजलि देने के लिए पहुँचे महानुभावों के सम्मुख उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं को रखा।

### देश-विदेश की आर्य प्रतिनिधि सभाओं एवं आर्य समाजों से शोक संदेश प्राप्त

श्रद्धांजलि देने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के आचार्य विजय पाल, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा, उत्तराखंड आर्य प्रतिनिधि सभा के छाया प्रधान डॉ. विनय विद्यालंकार, आर्य प्रतिनिधि सभा गुजरात के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू-कश्मीर सभा के प्रधान राकेश चौहान, मंत्री रविकांत, विश्व हिन्दू परिषद दिल्ली के प्रवक्ता श्री विनोद बंसल, आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के प्रधान श्री गंगा प्रसाद जी, समाज सेवी ठाकुर विक्रम सिंह जी, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से श्री दयाराम राजाराम बसैये, सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल की अध्यक्षा साधवी उत्तमायति, आर्य प्रतिनिधि सभा झारखण्ड के प्रधान श्री भारत भूषण त्रिपाठी, राष्ट्र कवि सारस्वत मोहन मनीषी, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के प्रधान एवं एम. डी. एच. के चेयरमैन महाशय धर्मपाल जी, दक्षिण दिल्ली वेद

...शेष पेज 5 पर

## सार्वदेशिक सभा की अंतरंग सभा की बैठक संपन्न

# श्री सुरेश चन्द्र आर्य सर्वसम्मति से प्रधान मनोनीत

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अंतरंग सभा की बैठक सभा प्रधान आचार्य बलदेव जी की मृत्यु के उपरांत उपप्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी की अध्यक्षता में रविवार 7 फरवरी 2016 को आर्य समाज हनुमान रोड नई दिल्ली के सभागार में सम्पन्न हुई। बैठक के मुख्य विषय आचार्य बलदेव जी के शोक प्रस्ताव एवं उनके स्थान पर नये प्रधान की नियुक्ति का था।

बैठक की कार्यवाही ईश्वर स्तुति और प्रार्थनोपासना एवं मंत्रोच्चारण के साथ आरंभ हुई। सभा मंत्री श्री प्रकाश आर्य जी ने बैठक की कार्यवाही का संचालन किया एवं सभा के यशस्वी प्रधान आचार्य बलदेव जी को याद करते हुए श्रद्धासुमन अर्पित किया। बैठक में शोक प्रस्ताव के बाद सभा के रिक्त पदों की पूर्ति के लिए विचार-विमर्श किया गया। सभा मंत्री जी ने कहा कि आचार्य बलदेव जी हरियाणा प्रांत से संबंध रखते थे। अत: आचार्य विजयपाल जी को सभा का उप प्रधान बनाया जाना चाहिए। प्रस्ताव को सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया। सभा प्रधान का पद स्वीकार करने के लिए उपस्थित सभी सदस्यों एवं अधिकारियों ने महाशय धर्मपाल जी से निवेदन किया। इस पर महाशय जी ने अस्वस्थता के कारण निवेदन को अस्वीकार करते हुए उप प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी को प्रधान पद का पदभार ग्रहण करने का निवेदन किया तथा आशीर्वाद दिया। तत्पश्चात् सभी उपस्थित सदस्यों ने सर्वसम्मति से श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी को प्रधान के रूप में मनोनीत किया। बैठक में आर्य प्रतिनिधि सभा महाराष्ट्र, आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य भारत, आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश एवं विदर्भ, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखंड, आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, आर्य प्रतिनिधि सभा झारखण्ड, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा गुजरात आदि से अंतरंग सदस्य पधारे।

## दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य केन्द्रीय सभा के आगामी कार्यक्रम

**महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव**
शुक्रवार, दिनांक 4 मार्च 2016,
सायंकाल 3 से 7 बजे
स्थान: आर्य समाज मोती नगर, न.दि.-15

**ऋषि बोधोत्सव**
दिनांक 7 मार्च 2016,
प्रात: 8 से सायं 4 बजे
स्थान- रामलीला मैदान, दिल्ली

**नव संस्येष्टि (होली)**
दिनांक 23 मार्च 2016, सायं 3 बजे
स्थान- रघुमल आर्य कन्या सी.सै. स्कूल, राजा बाजार, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली

**आर्य समाज स्थापना दिवस**
दिनांक : 8 अप्रैल 2016, प्रात: 8 बजे
स्थान- फिक्की सभागार, 12 खम्बा रोड,
निकट मण्डी हाउस मैट्रो स्टेशन, नई दिल्ली

समस्त आर्य समाजों से निवेदन है कि उपरोक्त तिथियों एवं समय में अपना कोई कार्यक्रम आयोजित न करें तथा अधिकाधिक संख्या में सभी कार्यक्रमों में पहुंचकर संगठन शक्ति का परिचय दें।

स्वाध्याय

# आराधना कर

*अभि प्र गोपतिं गिरेन्द्रमर्च यथा विदे। सूनुं सत्यस्य सत्पतिम्।।*
*-ऋ. 7/69/4; साम. पू. 2/28/4; अथर्व. 20/92/1*
*ऋषि :- प्रियमेध:।। देवता-इन्द्र:।। छन्द:-गायत्री।।*

**विनय**- हे मनुष्य! यदि तू यथार्थ सत्यज्ञान प्राप्त करना चाहता है तो तू इन्द्र की शरण में जा। ये इन्द्रियां-प्रत्यक्ष ज्ञान का साधन समझी जानेवाली ये इन्द्रियां तुझे परिमित ज्ञान ही देंगी तथा बहुत बार बड़ा भ्रामक ज्ञान उत्पन्न करेंगी; मन इन्द्रिय भी तुझे दूर तक नहीं पहुंचाएगी; और तेरे राग-द्वेषपूर्ण मलिन मन की तर्कना-शक्ति केवल कुतर्क में लगेगी। बाहर से मिलनेवाला ज्ञान अर्थात् विद्वानों के उपदेश और तत्त्वज्ञानियों के ग्रन्थ अपनी-अपनी दृष्टि से कहे व लिखे जाने के कारण तुझे कभी कुछ शान्ति न दे सकेंगे; बहुत सम्भव है कि ये तुझे और उलझन में डाल दें। तुझे शान्ति दे सकने वाला यथार्थ ज्ञान अपने अन्दर से, अपनी आत्मा से ही मिलेगा। इसे तू अपनी आत्मा में खोज; उस अपनी आत्मा में खोज जो इन सब इन्द्रियों का स्वामी है जिसने अपनी शक्ति प्रदान करके मन आदि इन्द्रियों को अपना साधन बना रखा है जो सत्य ज्ञानस्वरूप है जो परम सत्यस्वरूप परमात्मा का पुत्र है और जो स्वभावत: सदा सत्य का पालक है। हे मनुष्य! तू इस सत्यदेव की पूजा कर, आराधना कर, पूरे यत्न से इसे प्रसन्न कर तो तुझे सत्य मिल जाएगा। वाणी-शक्ति द्वारा तू इसकी अपरोक्ष पूजा कर। इस सत्यमय देव की आराधना करने के लिए तुझे सत्यमय वाणी की साधना करनी पड़ेगी। बोलने में, व्यवहार में, हर एक अभिव्यक्ति में पूरी तरह सत्य का पालन करना होगा; अन्दर की मनोमय वाणी में भी सर्वथा सत्य के ही चिन्तन- मनन की विकट तपस्या करनी होगी। अन्दर घुसने पर ही तुझे पता लगेगा कि परिपूर्ण वाणी द्वारा सत्य की आराधना करना कितना कठिन है, पर साथ ही यह भी सच है कि जब तू यह साधना पूरी कर लेगा तो तेरा 'सत्य सुनू', 'सत्पति' आत्मा प्रकट हो जाएगा और अपना अमूल्य भण्डार, सब सत्यज्ञान के रत्नों का भण्डार, तेरे लिए खोल देगा। तब तुझे कोई उलझन न रहेगी, तेरा निर्मल मन ठीक ही तर्क करेगा, तेरी इन्द्रियां भी अधिक स्पष्ट देखेंगी और सबसे बड़ी बात तो यह है कि तब तुझे वह सत्यमयी, 'ऋतम्भरा' बुद्धि मिल जाएगी जिसके द्वारा तू जब जिस विषय का यथार्थ ज्ञान पाना चाहेगा वह सब तुझे प्रकाशित हो जाया करेगा। सत्य का पालन करने वाला सत्पति आत्मा स्वयमेव तेरे लिए सत्य की रक्षा करता रहेगा। वाणी द्वारा सत्य की साधना करने का यह स्वाभाविक फल है। हे मनुष्य! तू इस सत्य इन्द्र की आराधना कर, अपरोक्ष रूप से पूरी तरह आराधना कर।

**शब्दार्थ:**- हे मनुष्य! यथाविदे-यथार्थ ज्ञान पाने के लिए तू गोपतिम्-इन्द्रियों के स्वामी इन्द्रम-आत्मा का गिरा-वाणी द्वारा अभि प्र अर्च-अपरोक्ष और पूरी तरह पूजन कर, उस आत्मा का जो सत्यस्य सूनुम्-सत्य का पुत्र है और सत्पतिम्-सदा सत् का पालक है।

**साभार : वैदिक विनय**

**पुस्तक प्राप्ति के लिए वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।**

सम्पादकीय

# संस्कार पर प्रश्न!

मनुष्य की बहुत सारी चिंताओं के बीच एक नई चिंता का जन्म और हो गया है कि आखिर मरने के बाद क्या होगा! मेरा अंतिम क्रिया कर्म कैसे होगा? क्योंकि राष्ट्रीय हरित पंचाट (एनजीटी) ने पर्यावरण मंत्रालय और दिल्ली सरकार से कहा है कि वे मानव शवों के दाह संस्कार के वैकल्पिक तरीके उपलब्ध कराने संबंधी योजनाओं की पहल करें। पंचाट ने लकड़ियां जलाकर किए जाने वाले पारंपरिक दाह संस्कार को पर्यावरण के लिए घातक बताते हुए कहा है कि लोगों की विचारधारा बदलने और विद्युत शवदाह एवं सीएनजी जैसे पर्यावरण अनुकूल तरीके अपनाने की जरूरत है हालाँकि मामला आस्था और लोगों की जीवन दशा से जुड़ा है इसलिए यह नेतृत्व करने वालों और खास तौर से धार्मिक नेताओं का दायित्व है कि वह आस्थाओं का रुख एक दिशा की ओर मोड़ें और लोगों की अपनी आस्थाओं का पालन करने की विचाराधारा में बदलाव लाकर उन्हें पर्यावरण अनुकूल रीति अपनाने के लिए प्रेरित करें।'

एनजीटी ने कहा है कि दाह संस्कार के परंपरागत उपायों से पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है और नदी में अस्थियां बहाने से पानी में प्रदूषण का इज़ाफ़ा होता है। कभी-कभी लोग अंतिम संस्कार की विभिन्न विधियों के लाभ एवं हानि का मूल्यांकन पर्यावरण पर पड़ने वाले इसके प्रभाव के आधार पर करते हैं । यह एक मापदंड हो सकता है किन्तु अंतिम संस्कार को आध्यात्मिक और सामाजिक दृष्टि से कहें तो शव की गति कहते हैं जिसमें समाज और पर्यावरण को हानि न हो।

इस बारे में कुछ लिखने से पहले कुछ सम्प्रदायों के अंतिम संस्कार के बारे जानना अच्छा उचित होगा। भारत में तकरीबन हजार सालों से रह रहा पारसी समुदाय जो अपने शव कौओं, चीलों आदि के खाने के लिए फेंक देता है या यूं कहें शवों की चील, कौओं और अन्य पशु-पक्षियों के लिए आहार स्वरूप छोड़ दिया जाता है। मृत देह को एक ऊंचे बुर्ज (टावर अश्वफ साइलेंस) पर रख दिया जाता है, जहां उसे गिद्ध और चील जैसे पक्षी खा जाते हैं। इसके बाद वैसे देखा जाये तो ईसाई समुदाय में दफनाने का रिवाज़ है किन्तु ब्रिटिश मीडिया के सर्वे के अनुसार आने वाले कुछ वर्षों में कब्रिस्तानों में शव दफनाने के लिए जगह ही नहीं मिलेगी जबकि पहले ही इंगलैंड में अनेक स्थानों पर पार्किंग व रास्तों को कब्र के रूप में प्रयोग किया जा रहा है। वहां के कब्रिस्तान व क्रिमेटोरियम प्रबंधन संस्थान के टिम मौरिस का कहना है कि ''हालात खराब हैं और इसका समाधान बहुत जरूरी है।'' हालांकि इंगलैंड में 75 प्रतिशत शवों को जलाकर दफनाया जाता है ईसाई सम्प्रदाय में दफनाना ही सर्वाधिक स्वीकार्य अंतिम संस्कार है परंतु कुछ अपवादों में कैनन लश्व जलाने की इजाजत देता है।'' इसी वर्ष पंजाब के मोगा में एक ईसाई परिवार के एक सदस्य की मौत के बाद उसे दफनाने के लिए जमीन न मिलने पर शव को दूसरे गांव में दफनाना पड़ा। हालात को देखें तो अब भारत में ही नहीं विदेशों में भी शवों को दफनाने के लिए जगह कम पड़ने लगी है।

ठीक यही हाल मुस्लिम समुदाय में है यदि ग्रामीण इलाके छोड़ दिए जायें तो मुम्बई में जगह की कमी के चलते नामवर फिल्मी हस्तियों में मधुबाला, मो. रफी, नौशाद व साहिर की कब्रें खोदकर उनके स्थान पर नई कब्रों की जगह बनाई गई है और इन महान हस्तियों के अवशेषों को नष्ट कर दिया गया है।

यही बात शव को नदियों में बहाने पर भी लागू होती है और इसीलिए हिन्दू धार्मिक अनुष्ठानों के अनुसार अंतिम संस्कार में चिता पर गंगाजल, घी, चंदन, हवन सामग्री, तुलसी की लकड़ी आदि सामग्री डाली जाती है। अत: इस सामग्री के उपयोग से अंतिम संस्कार करने पर प्रदूषण की आशंका न्यूनतम हो जाती है। खुलापन सदैव लाभदायक होता है। सत्यार्थ प्रकाश में स्वामी दयानंद सरस्वती ने एक प्रश्न की समीक्षा में लिखा है कि ''मुर्दे को गाड़ने से संसार की बड़ी हानि होती है क्योंकि वह सड़कर वायु को दुर्गन्धमय कर रोग फैला देता है। मुर्दो को गाड़ने से अधिक भूमि खराब होती है जो जलाना है वह सर्वोत्तम है क्योंकि उसके सब पदार्थ अणु होकर वायु में उड़ जाते हैं।'' मृत शरीर नष्ट करने के अंतिम संस्कार की सभी विधियों में दाहसंस्कार सबसे अधिक लाभप्रद है। इससे हमारा समाज एक काम कर सकता है कि किसी भी दाह संस्कार में जाते समय थोड़ा-थोड़ा घी और सामग्री लेकर जरूर जाये। इससे पर्यावरण भी बना रहेगा और प्यार भी किन्तु एक प्रश्न जो उठता है क्या एनजीटी ने मात्र लकड़ी बचाने के लिए पत्र लिखा है? फिर तो हो सकता है एनजीटी कल हवन को भी पर्यावरण बचाने के नाम पर अवैध घोषित करने की मांग रख दे!

**-सम्पादक**

बोध कथा

# मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना

कुछ वर्ष पहले बम्बई के सम्बन्ध में गुजरात और महाराष्ट्र वालों में जो झगड़ा हुआ, उसे कौन भूल सकता है? उन दिनों आस्ट्रेलिया का एक परिवार बम्बई के एक होटल में ठहरा था। नीचे सड़क पर छुरे चल रहे थे। लाठियां चल रही थीं। एक-दूसरे का सिर फोड़ा जा रहा था। झगड़ा हो रहा था। आस्ट्रेलियन परिवार के एक युवक ने यह सब कुछ देखा तो अपने पिता से पूछा- ये लोग परस्पर क्यों लड़ रहे हैं? पिता ने उत्तर दिया- ''पुत्र! ये मनुष्य नहीं। इनमें कुछ मराठी हैं, कुछ गुजराती हैं। इनमें मनुष्य कोई नहीं। यदि मनुष्य होते तो एक ही देश के निवासी होकर आपस में लड़ते क्यों? ''

यह अद्‌भुत दृश्य इस देश में है। कहीं धर्म का झगड़ा है, कहीं भाषा का; कहीं प्रदेश का झगड़ा है, कहीं जाति का; कहीं राजनीति का झगड़ा है, कहीं अर्थनीति का। झगड़े के कई आधार उत्पन्न कर रखे हैं हमने और भुला दिया है इस बात को कि मिलाप का भी एक आधार है-यह पृथिवी जिस पर हम रहते हैं।

हम दूसरों को अच्छा बनाना चाहते हैं, स्वयं अच्छे बनना नहीं चाहते। दूसरों को मनुष्य देखना चाहते हैं, स्वयं मनुष्य बनना नहीं चाहते।

हिन्दू है कोई, मुसलमां कोई।
मैं पूछता हूं तुम में है इनसां कोई?

**साभार : बोध कथाएं**

**पुस्तक प्राप्ति के लिए वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।**

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

| | | | |
|---|---|---|---|
| • प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36=16 | मुद्रित मूल्य 50 रु. | प्रचारार्थ 30 रु. | प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं |
| • विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36=16 | मुद्रित मूल्य 80 रु. | प्रचारार्थ 50 रु. | |
| • स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30=8 | मुद्रित मूल्य 150 रु. | | प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन |

10 या 10 से अधिक प्रतियां लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

# नोबल नहीं, न्याय और आजादी दो!

आईएसआईएस की रेप पीड़िता यजिदी महिला नादिया मुराद को वर्ष 2016 के नोबेल शांति पुरस्कार से नवाजा जा सकता है। नार्वे की राजधानी ओस्लो स्थित नोबेल पुरस्कार समिति ने सोमवार को इस वर्ष के लिए दिए जाने वाले नोबेल शांति पुरस्कार के लिए नामित लोगों की लिस्टर पूरी कर ली है। आईएसआईएस के चंगुल से बचकर आई लड़की ने बयां किया अपना दर्द पांच सदस्यों की इस समिति ने 200 लोगों का नाम इस लिस्ट में शामिल किया है। असल मायने में यह फैसला स्वागत योग्य हो सकता है किन्तु न्यायकारी नहीं है। क्योंकि आईएसआईएस पीड़ित केवल एक नादिया मुराद नहीं बल्कि हजारों यजिदी महिलाएं और बच्चियां हैं जो अब भी आतंकी संगठन आई एस की कैद में नारकीय जीवन बिता रही हैं।

आखिर कौन है यह यजिदी! यजिदी समुदाय अपने आप में बेहद खास और रहस्यमय है। यह ईसाई, हिन्दू और पारसी लोगों के मिश्रण के तौर पर देखा जा सकता है। पारंपरिक रूप से ही ये यजिदी उत्तर-पश्चिमी इराक, उत्तर-पश्चिमी सीरिया और दक्षिण-पूर्वी तुर्की में बहुत छोटे-छोटे समुदाय के रूप में रहते हैं। यजिदियों की मान्यता है कि आत्मा कभी नहीं मरती। वह केवल एक शरीर से दूसरे शरीर में दाखिल होती है। इसलिए यजिदी पुनर्जन्म की अवधारणा पर भी विश्वास रखते हैं। इनके लिए धर्म से निकाला जाना जीवन का सबसे दुर्भाग्यपूर्ण समय होता है क्योंकि इससे उनकी आत्मा को मोक्ष नहीं मिलता। इसलिए कोई भी यजिदी धर्मांतरण नहीं कर सकता। विवाह के दौरान जहां अंगूठियां बदली जाती हैं वहीं यजिदी धर्म में रोटी को दो टुकड़ों में बांटकर पति-पत्नी को खिलाया जाता है। हिन्दू धर्म की तरह विवाह के समय स्त्रियां लाल जोड़ा पहनती हैं। इन्हें एकेश्वरवाद के सिद्धांत पर विश्वास करने वाला माना जाता है। किन्तु आज जिस तरीके से यजिदी समुदाय पर हमला हुआ। उनकी मासूम बच्चियों को आईएस के आतंकी उठाकर ले गये। सामूहिक रूप से यजिदी समुदाय के पुरुषों को कत्ल किया गया जिस वीभत्स हत्याकांड को देखकर आत्मा तक सिहर जाये परन्तु यूरोप के लोग उनके घावों पर मरहम के रूप में मात्र एक नोवल पुरस्कार थमा रहे है; यह दोहरा मापदंड क्यों? जब ईसाई समुदाय के किसी स्त्री या पुरुष को आईएस द्वारा सताया जाता है तो अगले रोज यूरोपीय समुदाय मिलकर आईएस के ठिकानों पर हजारों बम बरसा देते हैं। किन्तु जब आईएस द्वारा कोई अन्य समुदाय सताया या मारा जाता है तो यही लोग झूठी मानवता का ढोंग दिखाते हुए नोवल आदि पुरस्कार थमा देते हैं!

19 जनवरी को इराक के सिंजर शहर से इस आतंकी संगठन ने 5 हजार से ज्यादा यजिदी महिलाओं और बच्चियों को बंधक बनाकर उनके साथ क्रूरता की हदें पार की गयीं। इन्हें यौन गुलाम बनाकर बेचा गया। डेली मेल में छपी खबर के अनुसार आतंकियों ने 12 साल की एक लड़की पर भी कोई दया न दिखाते हुए सामूहिक बलात्कार जैसा घिनौना कृत्य किया। 12 साल की लड़की परला सिंजर का कसूर सिर्फ इतना था कि वो बस यजिदी समुदाय से थी। परला सिंजर की कहानी मानवीय संवेदनाओं के रौंगटे खड़े कर देने वाली है। उसके अनुसार आतंकी गुलामों को भूखा रखते है। कहते हैं शरियत के अनुसार गुलामों को भरपेट भोजन देने की मनाही है। क्या अब समस्त विश्व का मानवाधिकार आयोग बता सकता है कि शरियत को मानने वाला यह आतंकी नेटवर्क इस्लामिक नहीं है? कुछ महीने पहले यजिदी समुदाय की महिलाओं के लिए न्याय मांगने वाली फरीदा बताती है कि मुझे आज भी मासूम बच्चियों की बोली लगाते हुए आतंकियों के चेहरे याद है, मुझे उन लड़कियों का रोना याद है आई एस की गुलाम मंडियों में सब महिलाएं यजिदी समुदाय की हैं। आज नोबेल पुरस्कार समिति एक नदिया मुराद को शांति का नोवल थमा रही है। किन्तु उनकी कैद में तो हजारों नदिया मुराद है जो इसी यूरोपीय समुदाय से टकटकी लगाये आजादी और न्याय की भीख मांग रही हैं। मानवता की रखवाली का दंभ भरने वाले अमेरिका, ब्रिटेन, रूस आदि से पूछ रही हैं क्या हमारी जिन्दगी में बलात्कार, गुलामी और प्रताड़नायें ही रह गयी है?

**-राजीव चौधरी**

# सरमा पणि संवाद-एक विवेचन

विश्व के पुस्तकालय में उपलब्ध प्राचीनतम ग्रन्थ वेद है। प्राचीन भारतीय ऋषियों का मन्तव्य है कि सृष्टि के आदि में परमपिता परमात्मा ने ऋषियों के माध्यम से यह ज्ञान मनुष्यों को प्रदान किया। यह वेद परमपिता के नि:श्वास के समान हैं। इन ऋचाओं का मुख्य विषय स्तुति है और इस स्तुति के माध्यम से ऋषि परमात्मा के गुणों को अपने अन्दर धारण करने का प्रयास करते हैं। मंगलेच्छुक मनुष्य परम पवित्र इन ऋचाओं का अध्ययन करता है और स्वयं परमात्मा से ऋचाओं में स्थापित रस का आनन्द लेता है।[1]

कालान्तर में जब वेदों का साक्षात् दर्शन कठिन हो गया तो अन्य ग्रन्थ लिखे गये।[2] ब्रह्मा का (वेद) वयाख्यान ही ब्राह्माण कहलाता है। इन ब्राह्मणों में वेदों के भावों को यागों में विनियोग के साथ-साथ मन्त्रों की व्याख्या को रोचक बनाने के लिए नाटक का रूप दिया गया और इन नाटकों को जन तक पहुंचाने के लिए आख्यान के रूप में व्याख्यायें की गई।

**सरमा तथा पणि संवाद:** सरमा शब्द निर्वचन प्रसंग में उद्घृत ऋग्वेद 10.108.1 के व्याख्यान में प्राप्त होता है। आचार्य यास्क का कथन है कि इन्द्र द्वारा प्रहित देवशुनी सरमा ने पणियों से संवाद किया।[3] पणियों ने देवों की गाय चुरा ली थी। इन्द्र ने सरमा को गवान्वेषण के लिए भेजा था। यह एक प्रसिद्ध आख्यान है।

आचार्य यास्क द्वारा सरमा माध्यमिक देवताओं में पठित है। वे उसे शीघ्रगामिनी होने से सरमा मानते हैं। वस्तुत: मैत्रायणी संहिता के अनुसार भी सरमा वाक् ही है,[4] गाय रश्मियां है[5] इस प्रकार यह आख्यान सूर्य रश्मियों के अन्वेषण का आलंकारिक वर्णन है। निरुक्त शास्त्र के अनुसार ''ऋषे: दृष्टार्थस्य प्रीतिर्भवत्याख्यानसंयुक्ता''[6] अर्थात् सब जगत के प्रेरक परमात्मा अद्रष्ट अर्थो को आख्यान के माध्यम से उपदिष्ट करते हैं। वेदार्थ परम्परा के अनुसर मंत्रों के तीन प्रकार के अर्थ होते हैं। आधिभौतिक, आदिदैविक, आध्यात्मिक, तीनों दृष्टियों से इस सूक्त के पर्यालोचन से सिद्ध होता है कि सूक्त किन्हीं विशेष अर्थो को कहता है। विश्लेषण के लिए इस सम्वाद में प्रयुक्त शब्दों के अर्थो को व्याकरण और निरुक्त के अनुसार समझने की आवश्यकता है। क्रमश: एक एक शब्द पर विचार करते हैं।

पणय: ऋग्वेद में 16 बार प्रयुक्त बहुबचनान्त पणय: शब्द तथा चार बार एकबचनान्त पणि शब्द का प्रयोग हैं। पणि शब्द पण् व्यवहारे स्तुतौ च धातु से अच् प्रत्यय करके पुन: मतुवर्थ में अत इनिठनौ ''से इति प्रत्यय करके सिद्ध होता है। य: पणते व्यवहरति सतौति स पणि: अथवा कर्मवाच्य में पण्यते व्यवहियते सा पणि:''। अर्थात् जिसके साथ हमारा व्यवहार होता है और जिसके बिना हमारा जीवन व्यवहार नहीं चल सकता है उसे पणि कहते हैं। इस प्रकार यह पणि शब्द मेघ का वाचक है। अथवा वायु का वाचक है। इस पणि को वृत्त अथवा असुर कहा गया है आचार्य यास्क ने वृत्रं वृणोते: कहकर जो आवरण करता है, ढक लेता है उसे वृत्र कहते हैं। वही वृत्र वरण कर लेने वाला मेघ जब वारिदान करता है तब देव कहलाता है। किन्तु जब जल को सुरक्षित कर लेता है बरसने नहीं देता, तब वह असुर कहलाता है। इसकी व्याख्या इस प्रकार कर सकते हैं राति ददाति इति र: सु शोभनं राति ददाति इति सुर: नु सुर: असुर: अर्थात् इस यौगिक अर्थ के अनुसार असुर शब्द पणि के प्रसंग में अवरोधक मेघ है। (2) इन्द्र, निरुक्तकार यास्क के अनुसार इन्दति परमैश्वर्यवान् भवति इति इन्द्र:, इराम जलानां आनेता इन्द्र:- सूर्य। इसी तरह आदिदैविक अर्थ में इन्द्र सूर्य का वाचक हैं आध्यात्मिक अर्थ में इन्द्र जीवात्मा और परमात्मा को कहते हैं। इन्द्र सूर्य की गाव:-रश्मय: गाव: इति रश्मि नामसु पठितम् (निरुक्त) अब इस कथा का भाव हुआ कि इन्द्र- सूर्य की गाव:, रश्मियों को जल न देने वाले असुरों-मेघों ने आच्छन्न कर लिया है। इन्द्र के बार-बार सूचना देने पर भी पणियों ने इन्द्र की गायों को नहीं छोड़ा और जिससे प्रजा व्याकुल होने लगी, तब इन्द्र ने दूती भेजी। दूती को यहां पर देवशुनी शर्मा कहा गया है। सरति गच्छति सर्वत्र इति शरमा, देवानां सुनी सूचिका दूती वा देवसूनी, जो तेजी से गति करती है और देवों की दिव्यता की सूचना देती है। वह विद्युत की यहां देवसुनी शरमा कही गई है। इस प्रकार देवशुनी बादल की गड़गढ़ाहट रूपी ध्वनि के साथ पणियों से संवाद करती है और कहती है कि हमारे राजा की गौओं को छोड़ दो नहीं तो हमारा बलवान राजा दण्ड देगा। पणियों ने देवशुनी की बात नहीं मानी, तब इन्द्र ने वज्र प्रहार कर अर्थात् वायु के प्रहार के माध्यम से पणियों को मारकर धरती पर सुला दिया और अपनी गायों को मुक्त करा लिया। सारा संसार वृष्टि से सुखी हुआ और सूर्य की किरणें चारों ओर फैल गई। वैदिक आख्यानों को सामान्य अर्थो में ग्रहण न करके विशिष्ट एवं यौगिक अर्थो में ही ग्रहण करना चाहिए। शब्दों के यौगिक अर्थो के आलोक में इन आख्यानों को देखने पर वेदार्थ की उत्तम आदर्श नव्य और दिव्य प्रक्रिया का ज्ञान होता है।

अन्त में प्रश्न आता है कि वैदिक आख्यानों की वास्तविकता स्वीकरणीय है अथाव अस्वीकरणीय? तो इसका संक्षेप में उत्तर यह है कि यदि रुपकालंकार की दृष्टि से वे आख्यान मन्त्रार्थ से संगत होते हैं तो वे आलंकारिक रूप से अथवा शाश्वत घटित होने वाली घटनाओं के ऐतिहासिक शैली के चित्रण के रूप में ग्राह्य एवं स्वीकरणीय हैं परन्तु यदि मन्त्र सूक्त गत संवादादि का सम्बन्ध यदि किसी अवरकालिक पुराण महाभारतादि ग्रन्थों में वर्णित अनित्य इतिहास से बालात् जोड़ा गया है और वह गठजोड़ असंगत और अटपटा लग रहा है तो उसे वास्तविक रूप में स्वीकार न करके सर्वथा अवास्तविक ही मानना चाहिए। तत्र नामान्याख्यातजानीति शाकटायनों नैरुक्तसमयश्च[7], तथा नाम च धातुजमाह निरुक्ते व्याकरणे शकटस्य च तोकम् के धातुज्ञ वैयाकरणों में विशेष: शाकटायनाचार्य तथा सम्पूर्ण नैरुक्त समुदाय वेद के शब्दों को धातुज अर्थात् यौगिक मानते हैं। इस दृष्टि से वेद मन्त्रों से कोई रुढ़ि अर्थ या मानवीय अनित्य इतिहास के वर्णन की सम्भावना वहां नहीं हो सकती। अत: सारमेयाश्वानी, यम-यमी, अश्विनी, देवापि, सरमा, पणि विश्वामित्र, ग्रत्समद इन्द्र आदि पदों से किसी लौकिक कथानक की कल्पना वेदों में करना अन्धाधुन्ध है। अत: ऐसे शब्दों और उनसे अभिव्यक्त होने वाले कथोपकथन से किसी अन्य प्राकृतिक व वैज्ञानिक तथ्य का अनुसंधान

...शेष पेज 6 पर

# वसन्त-पञ्चमी (माघ शुदि पञ्चमी)

*है ऋतुराज का आगमन, जल-थल में छवि आई है।*
*प्रकृति देवी नवल रंग में रंगमञ्च पर आई है।।*
*विरस द्रमों ने नवल दलों से निज श्रृंगार बनाया है।*
*मानो श्री वसन्त स्वागत हित रुचि वितान बनाया है।।*
*कुसुमभार का हार पहन कर मतवाले से झूम रहे।*
*कभी-कभी वे अनुरागवश अवनि चरण को चूम रहे।।*
*सरल रसाल साल में मञ्जुल पीतमञ्जरी आई है।*
*सरसों सुमन पीत भूतल में पीताम्बर छवि-छाई है।।*
*चित्र-विचित्र वेश भूषा में चित्रित मन हो जाता है।*
*नीरस हृदयों में सहसा ही, प्रेम बीज बो जाता है।।*
*श्री ऋतुराज राज की लक्ष्मी नये ढंग से आती है।*
*'श्रीहरि' विश्व-रंगशाला में नये रंग दिखलाती है।।*

**-कविशिरोमणि श्रीहरि**

शीत के आतंक का अपसार हो चला है, जराजीर्ण खल्वाट यष्टिधारी शिशिर का बहिष्कार करते हुए सरस वसन्त ने वन और उपवन में ही नहीं, किन्तु वसुधा भर में सर्वत्र अपने आगमन की घोषणा कर दी है। सारी प्रकृति ने वसन्ती बाना पहन लिया है। खेतों में सरसों फूल रही है। जहां तक दृष्टि दौड़ाइये, मानो पीतता सरिता की तरंगावली नेत्रों का आतिथ्य करती है, वनों में टेसू (पलाश-पुष्पों) की सर्वत्रव्यापिनी रक्ताभा दर्शनीय है। उपवन गेंदे और गुलदाऊदी की पुष्पावली के पीतपरिधान धारण किये हुए हैं, नगर और ग्राम में बाल-बच्चे वसन्ती वस्त्रों से सजे हैं। मन्द सुगन्ध मलय समीर सर्वत्र बह रहा है। ऋतुराज बसन्त के इस उदार अवसर पर इतने पुष्प खिलते हैं कि वायुदेव को उनकी गन्ध के भार से शनैः-शनैः सरकना पड़ता है। इस समय उपवनों में चारों ओर पुष्पों ही पुष्पों की शोभा नयनों को आनन्द देती है। जिधर देखिये उधर ही रंग-बिरंगे फूल खिल रहे हैं। कहीं गुलाब अपनी बहार दिखा रहा है तो कहीं गुले अब्बास के पंचरंगे फूल आंखों को लुभा रहे हैं। कहीं सूर्यप्रिया सूर्यमुखी सूर्य को निहार रही है, कहीं श्वेत कुन्द की कलियां दांत दिखला कर हंस रही हैं। गुलेलाल अपने गुलाबी पुष्पों के ओठों से मुस्कुरा रहा है। कमल अपने पुष्पनेत्रों से प्रकृति-सौन्दर्य को निहार रहा है। आम्रपुष्पों (बौरों) की छटा ही कुछ निराली है। उन पर भौंरों की गूंज और शाखाओं पर बैठी कोयल की कूक उसकी शोभा को द्विगुणित कर देती है। आम के बौरों में कुछ ऐसी मदमाती सुगन्ध होती है कि वह मन को बलात् अपनी ओर खींच कर मोद से भर देती है। आयुर्वेद के सिद्धान्तानुसार इस ऋतु में स्थावरों (वनस्पतियों) में नवीन रस का संचार ऊपर की ओर को होता है। जंगमों के शरीरों में भी नवीन रुधिर का प्रादुर्भाव होता है जो उनमें उमंग और उल्लास को बढ़ाता है। वसन्त ऋतु तो चैत्र और वैशाख में होती है। 'मधुमाधवौ वसन्तः स्यात्' यह वचन इसका पोषक प्रमाण है। किन्तु प्रकृति देवी का यह समारोह ऋतुराज वसन्त के लिए 40 दिन पूर्व से ही प्रारम्भ हो जाता है। जब प्रकृति देवी ही सर्वतोभावेन ऋतुनायक के स्वागत में तन्मय है तो उसी के पञ्चभूतों से बना हुआ रसिक शिरोमणि मनुष्य रसवन्त वसन्त के शुभागमन से किस प्रकार बहिर्मुख रह सकता है। फिर वनोपवनविहारी भारतवासी तो प्राकृतिक-शोभा निरीक्षण तथा प्रकृति के स्वर में स्वर मिलाने में और भी प्राचीन काल से प्रवीण रह हैं। वे इस अवसर पर आनन्द अनुभव से कैसे वंचित रह सकते थे। प्राचीन भारतीयों ने इस उदार ऋतु का आनन्द मनाने के लिए वसन्त पञ्चमी के पर्व की रचना की।

यह समय ही कुछ ऐसा मोदप्रद और मादक होता है कि वायुमण्डल मद और मोद से भर जाता है, दिशाएं कलकण्ठा कोकिला आदि विविध विहंगमों के मधुर आलाप से प्रतिध्वनित हो उठती हैं। क्या पशु, क्या पक्षी और क्या मनुज सब का हृदय आह्लाद से उद्वेलित होने लगता है, मनों में नयी-नयी उमंगें उठने लगती हैं। भारत के अन्नदाता किसान अपने अहर्निश के परिश्रम को आसन्न आषाढ़ी (साढ़ी) उपज सस्य के रूप में सफल देखकर फूले अंग नहीं समाते। उनके गेहूं और जौ के खेतों की नवाविर्भूत बालों से युक्त लहलहाती हरियाली उनकी आंखों को तरावट और चित्त को अपूर्व आनन्द देती है, कृषि के सब कार्य इस समय समाप्त हो जाते हैं। अतः कृषि-प्रधान भारत को इस समय आमोद-प्रमोद और राग-रंग की सूझती है। माघ सुदि वसन्त पञ्चमी के दिन से उसका प्रारम्भ होता है। भारत के ऐश्वर्य-शिखर पर आरूढ़ता और विलास-सम्पन्नता के समय पौराणिक काल में इस अवसर पर मदन-महोत्सव मनाया जाता था। संस्कृत साहित्यज्ञ जानते हैं कि भारतवासी सदा से कविता के वातावरण में विहार करते रहे हैं और कविता प्रतिक्षण कल्पना के वाहन पर विचरती रहती है। इसलिए शायद ही कोई भाव बचा हो जिसका काल्पनिक चित्र भारतीय कवियों ने न रचा हो।

आर्य पुरुषों को उचित है कि वे कामदाहक महापुरुषों के उत्तम उदाहरण को सदा अपने सामने रखते हुए मर्यादातिक्रमणकारी कामादि विकारों को किसी ऋतु मे भी अपने पास तक न फटकने दें और ऋतुराज वसन्त की शोभा को शुद्धभाव से निरखते हुए और परम प्रभु की रम्य रचना का गुणानुवाद करते हुए वसन्त पञ्चमी के ऋतूत्सव को पवित्र रूप में मनाकर उसका आनन्द उठायें। वसन्तोत्सव पर भारत में संगीत का विशेष समारोह होता है किन्तु जनता में श्रृंगारिक गानों का ही अधिक प्रचार है। संगीत से बढ़कर मन और आत्मा का आह्लादक दूसरा पदार्थ नहीं है। सद्भावसमन्वित संगीत से आत्मा का अतीव उत्कर्ष होता है। आर्य समाज ने भव्यभाव भरित गानों का प्रचार तो किया है किन्तु उसके गाने प्रायः संगीत विद्या के विरुद्ध बेसुरे और काव्य रस से शून्य पाये जाते हैं। आर्य महाशयों को इस दोष का परिमार्जन शीघ्र करना चाहिए। वसन्त आदि उत्सव संगीत और काव्यकला की उन्नति के लिए उपयुक्त और उत्तम अवसर हो सकते हैं। इन पर्वों पर आर्य जनता में कवितामय सुन्दर संगीत की परिपाटी प्रचलित करनी चाहिए। संगीत का सुधार भी सुधारकशिरोमणि आर्य समाज से ही सम्भव है।

## यज्ञ पद्धति

गृह्यकृत्य- प्रातः सामान्य पर्वपद्धति से प्रदर्शित प्रकारानुसार गृह के परिमार्जन (शोधन-लेपनादि) के पश्चात् स्वदेशीय पीताम्बर (पीतपट) परिधानपूर्वक सपरिवार सामान्य होम करके वसन्त वर्णनात्मक निम्नलिखित मन्त्रों से केशर मिश्रित (वा उसके अभाव में हरिद्रामिश्रित) हलवे के स्थालीपाक से पांच अधिक आहुतियां दी जायें। **(1)** वसन्तेन ऋतुना देवा वसवस्त्रिवृता स्तुताः। रथन्तरेण तेजसा हविरिन्द्रे वयो दधुः।। -यजु. 21/23, **(2)** मधुश्च माधवश्च वासन्तिकावृतू अग्नेरन्तः श्लेषोऽसि कल्पेतां द्यावापृथिवी कल्पन्तामाप ओषधयः कल्पन्तामग्नेयः पृथङ्मम ज्यैष्ठ्याय सव्रताः। ये अग्नयः समनसोऽन्तरा द्यावापृथिवी इसे वासन्तिकावृतू अभिकल्पमाना इन्द्रमिव देवा अभिसंविशन्तु तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवे सीदतम् स्वाहा। -यजु. 13/25।।, **(3)** मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः।



माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः स्वाहा।।, **(4)** मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवं रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता स्वाहा।।, **(5)** मधुमान् नो वनस्पतिर्मधुमां२ऽअस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः स्वाहा। - यजुर्वेद 13/27-29।। और उपर्युक्त केशराक्त हलवे का ही हुतशेष यज्ञ में समागत सज्जन प्रसाद रूप से भोजन करें तथा ऋतुराज के वर्णनपरक किसी कविता का मधुर गान किया जाये।

सामाजिक कृत्य - स्वसुभीते के अनुसार अपराह्न में सब समूह रूप से सम्मिलित होकर उपवन व कुसुमोद्यान में भ्रमण करें और वहीं सभा करके वसन्तवर्णनप्रक कविता पाठ और गीत का आनन्द उठायें। इसी अवसर पर बालकों की क्रीड़ाओं के प्रदर्शन और फलों के सहभोज का स्वसुभीते के अनुसार आयोजन किया जाये तो अत्युत्तम है, उससे वसन्तोत्सव की उत्कर्ष-वृद्धि हो सकती है।

**साभार : आर्य पर्वपद्धति**

उपरोक्त पुस्तक वैदिक प्रकाशन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-01 में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति के लिए सम्पर्क करें मो. 09540040339

पृष्ठ 1 का शेष **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि ...**

प्रचार मंडल के महामंत्री श्री चतर सिंह नागर, प्रांतीय आर्य महिला सभा को सहगल, कलकता से पधारे श्री आनन्द कुमार आर्य, ब्रह्मचारी श्री सुमेधा आर्य, पर दिल्ली एवं आस-पास के प्रदेशों के अनेक आर्य समाजों एवं आर्य शिक्षण संस्थाओं, आर्य वीरदल के पदाधिकारी प्राप्त हुए। इनमें आर्य समाज टोरंटो (कनाडा) से श्री अमरऐरी जी, आर्य प्रतिनिधि सभा मॉरिसश से श्री उदय

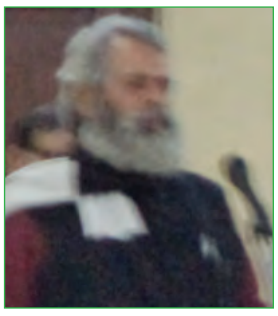

श्री प्रकाश कथूरिया, आर्य अनाथालय से श्रीमती श्रीबाला चौधरी, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, डी.ए.वी., टंकारा ट्रस्ट की ओर से श्री अजय अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के मंत्री श्री जोगेन्द्र खट्टर, वरिष्ट पत्रकार श्री बनारसी सिंह ने अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये। इस अवसर एवं कार्यकर्त्ता धर्माचार्य एवं गणमान्य जन बड़े संख्या में उपस्थित हुए। अनेक देशों की आर्य प्रतिनिधि सभाओं एवं आर्य समाजों से प्राप्त हुए शोक संदेश नारायण गंगू, आर्य प्रतिनिधि सभा आस्ट्रेलिया, फिजी आदि प्रमुख हैं। शोक प्रस्तावों की सूची पृष्ठ 7 पर प्रकाशित की गई है।

**मैं आर्य समाजी कैसे बना?**

# मंत्रों की आवाज सुनकर मैंने अपनी साईकिल आर्य समाज मंदिर की ओर मोड़ दी

मैं रोज उसी रास्ते से साइकिल से आता-जाता था। ध्वनि विस्तारक यंत्र की आवाज कानों में सुनाई पड़ती थी, किन्तु कभी उस ओर साइकिल नहीं मुड़ी। 52 साल की उम्र में एक दिन मैंने यह सोचकर साइकिल उस ओर मोड़ दी कि देखें उस मंदिर में होता क्या है?

सुबह साढ़े आठ बजे थे। मैं पहुंचा। यज्ञ हो रहा था। मुझसे भी आहुति डलवाई गई। यज्ञ समाप्त हुआ। मंत्री ओम प्रकाश आर्य ने मुझे सत्संग समाप्ति के पश्चात् नए व्यक्तियों के लिए लिखी एक अति सरल पुस्तक ''आर्य समाज एक परिचय'' भेंट की। मैंने उसे घर जाकर पढ़ा। वह पुस्तक मुझे बहुत पसन्द आई। फिर मैं मंत्री ओम प्रकाश आर्य के घर गया। मिला। बातचीत हुई। उन्होंने मुझे सत्यार्थ प्रकाश भेंट किया और निर्देश दिया कि इसे ध्यान पूर्वक पढ़ना। मैंने इसे आद्योपान्त पढ़ा। कई जगह शंकाओं का उन्हीं से समाधान करवाया।

इसके पश्चात् मंत्री जी मेरे घर आए। उन्होंने आर्य समाज में नियमित रूप से प्रति रविवार को आने को कहा। मैं आर्य समाज में जाने लगा। सत्यार्थ प्रकाश के बाद उन्होंने मुझे नित्य कर्म विधि, आर्य पर्व पद्धति, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका एवं उपदेश मंजरी दिया। मैं धीरे-धीरे इन सब पुस्तकों को पढ़ता रहा। जहां भी शंका होती मैं मंत्री ओम प्रकाश आर्य से पूछता। उनसे हमारी खूब बातचीत होती। आर्य समाज की चर्चा चलती। कुछ अन्तराल के बाद उन्होंने मुझे शुद्ध कृष्णायन, शुद्ध हनुमच्चरित, एकादशोपनिषद्, संस्कार विधि, महर्षि दयानन्द की जीवनी पढ़ने को दी। मैं इन सबका स्वाध्याय करता रहा। कई साल बाद उन्होंने मुझे दर्शन और वेद पढ़ने को दिए। अब तक मुझे आर्य समाज की जानकारी हो चुकी थी और मैं आर्य समाज में आने-जाने लगा था। मुझे वहां का पुस्तकालयाध्यक्ष बनाया गया। यह सब वृत्तान्त सन् 2005 के बाद का है। मेरा आर्य समाज के अन्य सदस्यों से भी परिचय हो गया।

प्रारम्भ में ''आर्य समाज: एक परिचय'' पुस्तिका का अवलोकन करने से विदित होता है कि यह नए लोगों के लिए काफी उपयोगी पुस्तक है। इसको मंत्री ओम प्रकाश आर्य ने लिखा है। मैं अपने व्यय से अब तक इसकी कई हजार प्रतियां छपवाकर नि:शुल्क वितरित कर चुका हूं। आर्य समाज के वैदिक साहित्य ने मुझे जो ज्ञान दिया उसे मैं कभी विस्मृत नहीं कर सकता। अब मैं यज्ञ करवाता हूं। स्कूलों में जाकर बच्चों को वैदिक सन्देश देता हूं। मैं 2014 में रिटायर्ड होकर अपने गांव लस्सानी दोयम जिला-अजमेर (राज.) आ गया और यहां आर्य समाज का प्रचार-प्रसार करता हूं।

धीरे-धीरे मेरा आर्य समाज से गहरा लगाव होता गया। वार्षिक उत्सव, पर्व, गोष्ठी आदि में भी आर्य समाज से बहुत कुछ सीखने को मिला। मैंने यज्ञोपवीत भी धारण किया। बेटी का विवाह वैदिक पद्धति से करवाया। नित्य सन्ध्या करता हूं। स्वाध्याय करता हूं। स्वाध्याय के नोट्स बनाता हूं। मेरा सारा समय स्वाध्याय एवं वेद प्रचार में ही जाता है। मेरे ही निवेदन से मंत्री ओम प्रकाश आर्य ने बच्चों को नैतिक शिक्षा से जोड़ने के लिए वैदिक रश्मि, सत्यार्थ सुगन्ध, अमृत कलश, वेदांजलि पुस्तक तैयार की। इनके द्वारा प्रतियोगिता करवाता हूं। मुझे इस सब कामों में बहुत सन्तुष्टि मिलती है। आर्य सत्संग गुटका भी तैयार करवाया है। वह भी अपने व्यय से मैं अपने गांव से हर दो महीने में आर्य समाज रावतभाटा जाता हूं। मेरे घर पूरा वेद सैट, दर्शन, उपनिषद्, सत्यार्थ प्रकाश, उपदेश मंजरी, नित्य कर्म विधि, संस्कार विधि, आर्य सत्संग गुटका मौजूद रहता है। मेरी खुद की वैदिक लाईब्रेरी है।

मेरा जीवन आर्य समाज में आकर धन्य हो गया अन्यथा मैं पता नहीं कहां भटकता। अब मुझे जीवन का वास्तविक रहस्य पता चल गया कि भगवान ने जीवन किसलिए दिया है। मेरा कहना है कि आर्य समाज में लोग लड़ाई-झगड़े न करें। इससे नए लोगों पर बहुत गलत प्रभाव पड़ता है। वे कट जाते हैं। अब मुझे आर्य समाज के अलावा दूसरा कार्य पसन्द नहीं आता। मैं नित्यश: इसी कार्य में समय लगाता हूं। वैदिक पत्र-पत्रिकाओं को मंगाता हूं। उनको भी पढ़ता हूं। मेरा सारा जीवन आर्य समाज को समर्पित है।

**-मोहन लाल, रावतभाटा**

*जो महानुभाव किसी की प्रेरणा/विचारधारा से आर्य समाजी बने उनके लिए आर्य संदेश में एक नया स्तंभ 'मैं आर्य समाजी कैसे बना' प्रारंभ किया गया है। आप भी अपने प्रेरक प्रसंग इस स्तम्भ हेतु अपने फोटो के साथ -'आर्य संदेश, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001' अथवा ईमेल aryasabha@yahoo.com द्वारा हमें भेज सकते हैं। आर्य संदेश के आगामी अंकों में इसे निरंतर प्रकाशित किया जाता रहेगा।* -संपादक

Continue from last issue

# Glimpses of the Atharva Veda

**Two Rivals Each Praying for Victory**

Two rivals confront for success each claiming that he is right. Each of them justifies his stand as reasonable denouncing his opponent as thoroughly dishonest and deceptive. Both the groups pray for victory with the hope that God is in their favour. Even the wicked and arrogant opposes a righteous cause out of arrogance and ignorance. He foresees a good fortune for him.

The verse says, 'Ye man, the Creator God being seated in the precinct of your heart is in constant surveillace of your thoughts. He responds to the prayers of him whose minds are bent on the right. He is the guardian of virtuous persons. Through His supreme valour, He destroys evils, apparent and latent. Guarding the sincere seeker of truth in his pursuit, He delightfully accepts his homage. He destroys the exploiter in the interest of the rightful devotee and humiliates the former's stronghold.'

त्वां जना ममसत्येष्विन्द्र संतस्थाना वि ह्वयन्ते समीके।

अत्रा युजं कृणुते यो हविष्मान्तासुन्वता सख्यं वष्टि शूरः।। (Av.xx.89.4)

Tvam jana mamasatyesvindra samtasthana vi hvayante samike. atra yujam krnute you havismannasunvata sakhyam vasti surah..

---

**Hymn to Prana-the Cosmic Breath**

Chapter XI, hymn 4, all the 26 verses speak of Cosmic Breath of which three are quoted below.

"Salutation to Breath (Prana) in whose control is this all, who has been Lord of all, in whom all stand firm."

"The herbs, being fed with rain breathe into voice: 'Verily you have extended our life-span, you have made us all fragrant."

"A man breathes out, breathes within the womb; when O Breath, You quicken, then he is born again."

प्राणाय नमो यस्य सर्वमिदं वशे।

यो भूतः सर्वस्येश्वरो यस्मिन्त्सर्व प्रतिष्ठितम्।। (Av.xi.4.1)

Pranaya namo yasya sarvamidam vase.

yo bhutah sarvasyesvaro yasmin sarvam pratisthitam..

अभिवृष्टा ओषधयः प्राणेन समवादिरन्।

आयुर्वै नः प्रातीतरः सर्वा नः सुरभीरकः।। (Av.xi.4.6)

Abhivrsta osdhayah pranena samavadiran.

ayurvai nah pratitarah sarva nah surabhirakah..

अपानति प्राणति पुरुषो गर्भे अन्तरा।

यदा त्वं प्राण जिन्वस्यथ स जायते पुनः।। (Av.xi.4.14)

Apanti pranati puruso garve antara.

yada tvam prana jinvasyatha sa jayate punah..

---

**The Horse of Time**

Time, the fast horse, is drawing the Universal cart. Tied with the quick steed, all the seven spheres, the seven lands, the seven breaths, the seven learnings revolve rouund. Unbiased, valorous, with no beginning point, the mightiest horse is running ever young. Countless are the suns, the earths and the mortals fastened to this massive creature and deadly frightened of him. The wise win over Time, the ignorant are won over by him. The verse says:

"Time, the seven-reigned horse, thousand eyed, unaging and prolific, draws the cosmic chariot. Sages with keen vision mount it; all the beings are at its wheels."

Mounting on him. expert riders have successfully reached their destination. Although physically absent, their presence in our mind exhilarates us. They shine as beacon guiding the journey of our lives. The radiant time is born mighty. He is the slayer of the wicked and upholder of the just. Sustaining all the beings, he alone pervades them thoruoughly. Surely, there is no other power superior to him. Face to face with all the beings, he is called kala the primal deity.

कालो अश्वो वहति सप्तरश्मिः सहस्राक्षो अजरो भूरिरेताः।

तमा रोहन्ति कवयो विपश्चितस्तस्य चक्रा भुवनानि विश्वा।। (Av.xix, 53.1)

kalo asvo vahati saptarasmih sahasraksho ajaro bhuriretah.

tama rohanti kavayo vipascitastasya cakra bhubanani visva..

**To Be Continue...**

---

पृष्ठ 3 का शेष

**सरमा पणि ...**

करना ही युक्ति संगत होगा। यदि कोई आख्यान मन्त्रार्थ को स्पष्ट करने के लिए कल्पित किये गये हैं तो उनको आलंकारिक दृष्टि से संगत मानना चाहिए। मन्त्रों में उपमा, रुपक, श्लेषादि अलंकारों का प्रयोग प्राचीन और अर्वाचीन प्रायः सभी भाष्यकारों ने स्वीकार किया। वैदिक आख्यानों में प्राकृतिकता, अलौकिकता आदि का वर्णन मिलता है। उर्वशी आख्यान में मेघों का और विद्युत का, सरमा, पणि आख्यान में विद्युत् और अवर्षणशील मेघों का, इन्द्र वृत्र आख्यान में विघुत् और मेघ के युद्ध का वर्णन है। वैदिक ग्रन्थों ने इनका प्राकृतिक अर्थ किया है।

उपरिगत विवेचन से यह सर्वथा स्पष्ट हो जाता है कि मन्त्रगत इतिहास अथवा आख्यान तत्वतः औपचारिक, अर्थवादात्मक उपमार्थक अथवा आलंकारिक हैं, आधुनिक अर्थ में ऐतिहासिक नहीं। अतः उनके सम्यक् अवगम एवं विश्लेषण में अतीव सावधानी तथा चिन्तन की अपेक्षा है।

**पादटिप्पणी:**

1. यः पावमानीरध्येतृषिभिः सम्भूत रसम्-ऋग्वेद 9.67.31, 2. साक्षात्कृतधर्माण ऋषयो बभूवः तेऽवरेभ्योऽसाक्षत् कृत धर्मभ्य उपदेशनं मंत्रान् सम्प्रादुः। उपदेशाय ग्लायन्तोऽवरे बिल्म ग्रहणाय ग्रन्थं समाम्नासिषु वेदं च वेदांगानि च। निरुक्त 1.20, 3. निरुक्त 11.25 देवशुनीन्द्रेण प्रहिता पणिभिरसुरैः समूढ इत्याख्यानम्।, 4. वाग् वै सरमा, 5. निरुक्त 2.7 सर्वेऽपि रश्मयो गाव उच्यते।, 6. निरुक्त 10.46, 7. निरुक्त 1/12, 8. पातंजल महाभाष्य 3.31

**शोधच्छात्रः**
उदयन आर्य (पी.एच.डी. छात्र)
दयानन्द वैदिक अध्ययन पीठ
पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़।

---

ग्रन्थ परिचय

# बम्बई-प्रवचन

**प्रश्न 1:** महर्षि ने तो अपने जीवन काल में देश के अनेक स्थानों पर प्रवचन दिये, परन्तु प्रवचन के विषय में केवल एक ही ग्रन्थ मिलता है-'उपदेश-मंजरी', जिसमें पूना के 15 प्रवचनों का संग्रह है। क्या इसके अतिरिक्त किसी अन्य ग्रन्थ में उनके अन्य प्रवचन नहीं मिलते?

**उत्तरः** पूना प्रवचनों की तरह एक अन्य ग्रन्थ भी है, जिसे 'बम्बई-प्रवचन' के नाम से 'ऋषि दयानन्द के शास्त्रार्थ और प्रवचन' नामक ग्रन्थ में सन् 1982 ई. में प्रथम बार प्रकाशित किया गया था।

**प्रश्न 2.** यह किस भाषा में है?

**उत्तरः** यह हिन्दी भाषा में है जिसे पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी ने गुजराती से अनुवाद किया था।

**प्रश्न 3.** इसमें ऋषि दयानन्द के कौन से प्रवचन हैं?

**उत्तरः** इसमें ऋषि दयानन्द के बम्बई में दिये गये व्याख्यान हैं जो उन्होंने अपने लगभग छः मास (30 दिसम्बर 1881 से 24 जून 1882 तक) के प्रवास के दौरान दिये थे।

**प्रश्न 4:** इस दौरान उनके कितने व्याख्यान हुए थे?

**उत्तरः** इस दौरान उनके 24 व्याख्यान हुए थे।

**प्रश्न 5:** क्या उस समय इन व्याख्यानों को रिकार्ड किया गया था?

**उत्तरः** इन व्याख्यानों को रिकार्ड तो नहीं किया गया, परन्तु व्याख्यानों का सार काकड़वाड़ी बम्बई, आर्य समाज की तत्कालीन लिखित 'कार्यवाही संचिका' में संकलित किया गया था, जो गुजराती भाषा में थी।

**प्रश्न 6:** फिर इनका हिन्दी भाषा में सबसे पहले अनुवाद किसने किया और उसका प्रकाशन कब हुआ?

**उत्तरः** इनका हिन्दी भाषा में अनुवाद सबसे पहले बम्बई निवासी श्री जगदेवसिंह जी ने किया और प्रकाशन 'वेदवाणी' के फरवरी-मार्च, सन् 1982 के अंकों में हुआ।

**प्रश्न 7:** जैसा कि प्रश्न-5 के उत्तर से प्रतीत होता है कि इन व्याख्यानों का सर प्रकाशित हुआ था। तो क्या इन व्याख्यानों का विस्तृत विवरण नहीं मिल सकता?

**उत्तरः** यदि परिश्रम किया जाए, तो बम्बई से गुजराती में छपने वाले ''जामे जमशेद' और 'मुम्बई समाचार' नामक समाचार पत्रों की उस समय की पुरानी फाइलों को ढूंढने पर इन व्याख्यानों को विस्तृत विवरण मिल सकता है।

**प्रश्न 8.** इसमें क्या प्रमाण है कि उपरिलिखित समाचार-पत्र उस समय इन व्याख्यानों को छापते ही थे?

**उत्तरः** प्रश्न-5 के उत्तर में उल्लिखित 'कार्यवाही-संचिका' में 5 फरवरी, सन् 1882 के दिन व्याख्यान का जो सारांश दिया गया है, उसके पश्चात् लिखा है- ''.....सविस्तार जानने के लिए 12 फरवरी का गुजराती का समाचार-पत्र देखें, उसमें पत्रकर्त्ता ने यथावत् लिखा है, उसे लोगों ने बांचा होगा।''

(''ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का इतिहास'): लेखक- युधिष्ठिर मीमांसक, पृ. 276 से साभार उद्धृत) तो फिर इस क्षेत्र में हमारे विद्वानों को अवश्य ही प्रयास करना चाहिए।

**महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय (प्रश्नोत्तरी)**
**वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें।**
**-मो. 09540040339**

# सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान आचार्य बलदेव जी की स्मृति में प्राप्त शोक संदेश

महाशय धर्मपाल, प्रधान, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य, अध्यक्ष श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर, श्री महर्षि दयानन्द निर्वाण न्यास, अजमेर, महर्षि दयानन्द गोसंर्वधन केन्द्र, गाजीपुर; श्री हरदेव रामधुनी, महामंत्री आर्य सभा मॉरीशस; डॉ. विश्राम रामबिलास प्रधान, आर्य समाज साउथ अफ्रीका; डॉ. वीर देव बिस्टा प्रोफेसर ईर्स्टन हैरिटेज फाउंडेशन, यू.एस.ए. ;आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक, अध्यक्ष, वेद विज्ञान मन्दिर (वैदिक एवं आधुनिक विज्ञान शोध संस्थान) जिला जालोर (राज0); साध्वी डॉ. उत्तमायति एवं श्रीमती मृदुला चौहान, सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल, नई दिल्ली; श्री विनय आर्य महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली; श्री प्रकाश आर्य मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली; श्री विमल शास्त्री, उपमन्त्री, महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास, जोधपुर; डॉ. याज्ञिक आचार्य, आर्य कन्या गुरुकुल परिवार शिवगंज; आर्य बी.बी. त्रिपाठी; डॉ. गोपाल बहेतू, महर्षि दयानन्द निर्वाण न्यास, भिनायकोठी अजमेर; श्री जगदीश प्रसाद केडिया, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल; डॉ. उदय नारानी गंगो, प्रधान, आर्य सभा मॉरीशास; श्री प्रवीण आर्य मंत्री, आर्य समाज सोनीपत; श्री सुदर्शन आर्य सचिव एवं महामंत्री, आर्यवीर दल, सोनीपत, आर्य केन्द्रीय सभा सोनीपत; श्री रमेश आर्य प्रधान, वेद प्रचार मण्डल, सोनीपत; श्री मनमोहन सिंह, आर्य समाज मन्दिर दिल्ली; श्री प्रधान, आर्य समाज लक्ष्मी नगर, दिल्ली; श्री सोमदेव मल्होत्रा प्रधान, आर्य समाज गोविन्दपुरी; समस्त सदस्यगण, आर्य समाज डी ब्लाक जनकपुरी, नई दिल्ली; श्री धर्मवीर आर्य मंत्री, आर्य समाज मोहन गार्डन; श्री रवि बहल मंत्री, आर्य समाज मन्दिर, निर्माण विहार, दिल्ली; श्री विनोद बंसल राष्ट्रीय प्रवक्ता, विश्व हिन्दू परिषद; श्रीमती रविकान्ता, प्रधाना, आर्य समाज सरिता विहार, दिल्ली; श्री अशोक गुप्ता, प्रधान, आर्य समाज सूरजमल बिहार, दिल्ली; श्री मंत्री जी, आर्य समाज खजूरी खास, दिल्ली; डॉ. वी. दयालु, महासचिव, संस्कृत शिक्षक संघ दिल्ली, श्री हरिओम बंसल प्रधान, आर्य समाज झिलमिल; मंत्री जी, आर्य समाज दरियापुर कलां दिल्ली; श्री आदर्श कुमार, मन्त्री, आर्य समाज मॉडल बस्ती शीदीपुरा, नई दिल्ली; श्री ऋषिपाल प्रधान, आर्य समाज मन्दिर; श्री अरुण आर्य मंत्री, आर्य समाज मन्दिर; श्री एस.पी. सिंह मंत्री, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य; श्री भीमसेन कामरा, आर्य समाज मन्दिर शादी खामपुर, नई दिल्ली; श्री जोगेन्द्र खट्टर, शान्ति देवी आर्य कन्या गुरुकुल, दिल्ली; श्री रवि कान्त महामन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू व कश्मीर; श्री राम भरोसे, आर्य समाज जहांगीर पुरी, दिल्ली; प्रधान, आर्य समाज मन्दिर(राम स्वरूप हाल) दिल्ली; श्रीमती शारदा आर्या, कार्यकारी संचालिका, आर्य वीरागना दल, दिल्ली; श्री सुरेन्द्र रैली, प्रस्तोता, आर्य विद्या परिषद्, दिल्ली; श्री सुरेश टण्डन प्रधान, आर्य समाज मन्दिर, न्यू मोती नगर, नई दिल्ली; श्री रणबीर दुआ, प्रधान, आर्य समाज तिलक नगर, नई दिल्ली; श्रीमती उषा किरण आर्या, प्रधान, आर्य समाज विवेक विहार, दिल्ली; श्री जोगेन्द्र खट्टर, महामन्त्री, अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ, दिल्ली एवं आर्यसमाज रानीबाग, दिल्ली; श्री रामलाल आहूजा, उपप्रधान, आर्य गुरुकुल रानीबाग, दिल्ली; श्री रामपाल पांचाल, प्रधान, आर्य समाज रोहतास नगर, दिल्ली; श्री चन्द्र मोहन आर्य, मंत्री, आर्य समाज मन्दिर डी.सी.एम. कॉलोनी, दिल्ली; डॉ. मुकेश आर्य आर्य समाज शाहबाद मोहम्मदपुर, नई दिल्ली; श्री योगेन्द्र कुमार आर्य, प्रधान, आर्य समाज बिड़ला लाइन्स, दिल्ली; कर्नल रवीन्द्र कुमार वर्मा, प्रधान, आर्य समाज हनुमान रोड, दिल्ली; श्री विनोद बंसल, कार्यकारी प्रधान, आर्य समाज संत नगर, दिल्ली; श्री राजीव आर्य, मंत्री, आर्य समाज रोहिणी, दिल्ली; प्रधान/मंत्री, आर्य समाज ए-ब्लॉक, जनकपुरी, नई दिल्ली; श्री महेन्द्र सिंह लोचब, मन्त्री, आर्य समाज औचन्दी, दिल्ली; प्रधान/मन्त्री, आर्य समाज मन्दिर, महरोली रोड, पालम कॉलोनी, नई दिल्ली; श्री मान्धाता सिंह आर्य, मन्त्री आर्य समाज सागरपुर, नई दिल्ली; श्री धर्मवीर पंवार, मन्त्री, आर्य समाज साकेत, नई दिल्ली; श्री राजेश मेंदीरत्ता, प्रधान, आर्य समाज लाजपत नगर, दिल्ली; श्री यशपाल मित्तल, महामंत्री, आर्य समाज पंचदीप, पीतमपुरा, दिल्ली; श्री राजेन्द्र वर्मा, मन्त्री, आर्य समाज कैलाश ग्रेटर कैलाश-1, दिल्ली; श्री ऋषि राज वर्मा, मंत्री आर्य समाज राधापुरी, दिल्ली; श्री सतीश चड्ढ़ा, मन्त्री, महर्षि दयानन्द जन कल्याण ट्रस्ट, कीर्तिनगर, नई दिल्ली; श्री सतीश चड्डा, मन्त्री, आर्य समाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली; श्री रामपाल शास्त्री, मानव सेवा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली; श्री अमर नाथ बत्रा, मंत्री, आर्य समाज, सुन्दर विहार, दिल्ली; श्री महेन्द्र सिंह, मंत्री, आर्य समाज आनन्द विहार, नई दिल्ली; श्री सुरेन्द्र सिंह, आर्य समाज फिरोजपुर बागंर सोनीपत; श्री वीरेन्द्र प्रधान, वेद प्रचार मण्डल पश्चिमी दिल्ली; श्रीमती प्रकाश कथूरिया, प्रधान, दिल्ली प्रान्तीय आर्य महिला सभा, दिल्ली; श्री चतर सिंह नागर, महामन्त्री, दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल, मस्जिद मोठ, दिल्ली; धर्मवीर आचार्य, महामन्त्री, आर्यवीर दल, प. उत्तर प्रदेश,बागपत; श्री बाला चौधरी, उपाध्यक्ष, आर्य समाज दरियागंज, दिल्ली; श्री कमला शर्मा, निदेशक, आर्य कन्या विद्यालय समिति, अलवर; श्री शिवलाल शास्त्री, शिमली (भिवानी); डॉ. सारस्वत मोहन 'मनीषी', रोहिणी, दिल्ली। एवम् प्रधान/मंत्री तथा सभी सदस्यगण आर्य समाज सी, ब्लाक जनकपुरी नई दिल्ली।

## धर्मवीर बाल हकीकतराय बलिदान दिवस समारोह

रतन चन्द आर्य पब्लिक स्कूल, सरोजनी नगर का वार्षिकोत्सव एवं धर्मवीर बाल हकीकतराय बलिदान दिवस समारोह दिनांक 14 फरवरी 2016 को आर्य समाज मन्दिर वाई ब्लॉक, सरोजनी नगर, नई दिल्ली में श्रीमती मृदुला चौहान, उप प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता में आयोजित किया जा रहा है। मुख्य अतिथि श्री धर्मपाल आर्य, प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं विशिष्ट अतिथि श्री विनय आर्य महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री अजय सहगल उपप्रधान आर्य केन्द्रीय सभा होगे। बच्चों द्वारा धर्मवीर बाल हकीकतराय की जीवनी पर विशेष नाटिका बच्चों द्वारा प्रस्तुत की जाएगी।

**-श्रीमती सविता महाजन,**
**प्रधानाचार्य**

### संस्कृत के संरक्षण एवं संवर्द्धन हेतु

## मंत्री स्मृति ईरानी को 1000 हस्ताक्षर युक्त प्रपत्र प्रेषित

संस्कृत शिक्षक संघ (दिल्ली) ने संस्कृत के संरक्षण एवं संवर्द्धन हेतु मानव संसाधन विकास मंत्रालय से एक हजार हस्ताक्षर युक्त पत्र के माध्यम से निवेदन किया है कि नवोदय विद्यालयों, केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में संस्कृत शिक्षा विभाग खोले जाने चाहिए, अखिल भारतीय संस्कृत शिक्षा बोर्ड की स्थापना होनी चाहिए, संस्कृत विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों को स्किल इंडिया तथा डिजिटल इंडिया कार्यक्रम से जोड़ा जाना चाहिए। संस्कृत भाषा में उच्च अनुसंधान हेतु हाईटैक केन्द्रों की स्थापना की जानी चाहिए साथ ही संस्कृत गुरुकुलों एवं पाठशालाओं को 100 प्रतिशत अनुदान दिया जाना चाहिए। संस्कृत शिक्षक संघ के महासचिव डॉ. वी. दयालु ने समस्त आर्य समाजों से अपील की है कि वे भी अपने स्तर से उपरोक्त सन्दर्भ में अधिक से अधिक लोगों का समर्थन/हस्ताक्षर युक्त पत्र सरकार को भेजकर निवेदन करें ताकि संस्कृत भाषा को संरक्षण प्राप्त हो सके। -डॉ. ब्रजेश गौतम,
अध्यक्ष, मो. 9968812963

## सुगन्धित वैदिक मुस्कान

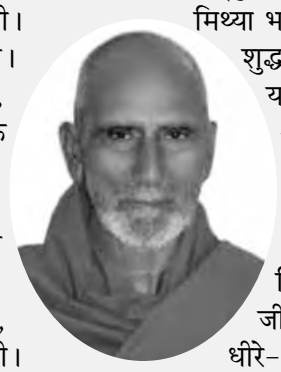

निश्छल मन के देवोपम इन्सान थे नैष्ठिक जी।
यज्ञव्रती दृढ़ संकल्पों की शान थे नैष्ठिक जी।
गुरुवर दयानन्द को राम मानकर कार्य किया,
आर्य जाति के सरल सहज हनुमान थे नैष्ठिक जी।
खंडन-संडन नहीं सिर्फ मंडन करना जाना,
अभिशप्तों के लिए सतत वरदान थे नैष्ठिक जी।
अपनी चिन्ता छोड़ दूसरों को निश्चिंत किया,
अपमानों के बीच खड़े सम्मान थे नैष्ठिक जी।
सदा रहे विजयेन्द्र निराशा पास न आने दी,
आशाओं के केन्द्र विरल कप्तान थे नैष्ठिक जी।
कहूं आधुनिक कृष्ण आपको तो भी कम ही है,
गौमाता के लिए सतत अभियान थे नैष्ठिक जी।
दयानन्द की फुलवारी में सदा वसन्त रहे,
इस चिन्ता में अस्त हुए दिनमान थे नैष्ठिक जी।
एक नहीं अगणित शिष्यों से मिलकर यह जाना,
अद्भुत ऊहा के अनुपम विद्वान थे नैष्ठिक जी।
मिथ्या भाषण कभी न भाया सदा सत्य गाया,
शुद्ध सुगन्धों की वैदिक मुस्कान थे नैष्ठिक जी।
यतियों के भी यती-जती सागर मीठे जल के,
आने वाले संकट के अनुमान थे नैष्ठिक जी।
पाखडों की पीठ टिकाने में न रहे पीछे,
अल्हा-ऊदल वीर मर्द मलसान थे नैष्ठिक जी।
पुनः व्याकरण सूर्य अस्त हो गया लगे ऐसा,
शिष्यों के हित गुरुकुल में गंगा स्नान थे नैष्ठिक जी।
धीरे-धीरे कंचन काया की छीजी माया,
किसे पता था कुछ दिन के मेहमान थे नैष्ठिक जी।
नमन आर्य आचार्य संत बलदेव सजल मन से,
अश्रु कह रहे कितने अधिक महान थे नैष्ठिक जी।
सभी 'मनीषी' मिलकर अब एकत्व राग गायें,
सदा सुनाई देगी ऐसी तान थे नैष्ठिक जी।

**-शिवलाल शास्त्री, (मेधाव्रत सत्यार्थी शिमली भवानी)**

## 'घर-घर यज्ञ, हर घर यज्ञ योजना'

यज्ञ से होने वाले लाभों को जन-साधारण तक पहुंचाने के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने 'घर-घर यज्ञ, हर घर यज्ञ' योजना का शुभारम्भ किया हुआ है। जिसमें सभा द्वारा नियुक्त पुरोहित श्री सत्य प्रकाश जी घर-घर जाकर यज्ञ कार्य सम्पन्न कराते हैं । इस यज्ञ को सम्पन्न कराने का सम्पूर्ण व्यय दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा वहन करती है। क्यों न आप भी आज ही इस महाकार्य के महायज्ञ में अपनी आहूति भी डालें। यज्ञ कराने के लिए श्री सत्य प्रकाश जी से मो. 09650183335 पर सम्पर्क करें।

# साप्ताहिक आर्य सन्देश

8 फरवरी 2016 से 14 फरवरी, 2016

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 11 फरवरी 2016/ 12 फरवरी, 2016

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0 (सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 10 फरवरी, 2016


## प्रवेश प्रारम्भ

पूज्य स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक द्वारा संस्थापित वानप्रस्थ साधक आश्रम, रोजड़, गुजरात के 'संस्कृत व्याकरण, उपनिषद् एवं दर्शन अध्यापन केन्द्र' में ब्रह्मचारियों को प्रवेश दिया जा रहा है। आवास, भोजन, वस्त्र, पुस्तक आदि समस्त साधन पूर्णत: नि:शुल्क उपलब्ध कराये जाते हैं। प्रवेश के लिए न्यूनतम आयु 18 वर्ष है। कुल काल के लिए ब्रह्मचारियों का परीक्षण किया जाता है। गुरुकुलीय दिनचर्या, पूर्ण अनुशासन, योगाभ्यास व अध्यात्म में रूचि रखने वाले ब्रह्मचारी ही प्रवेश के लिए निम्न पते पर सम्पर्क करें। स्थान समित हैं। **व्यवस्थापक**

**संस्कृत व्याकरण, उपनिषद् एवं दर्शन अध्यापन केन्द्र, वानप्रस्थ साधक आश्रम आर्यवन, रोजड़, पो. सागपुर, जि. सागपुर, जि. साबरकांठा, गुजरात-183307**

## महाशय धर्मपाल अभिनन्दन ग्रंथ का प्रकाशन प्रगति पथ पर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा महाशय धर्मपाल अभिनन्दन ग्रंथ प्रकाशन का कार्य प्रारम्भ हो चुका है। आप सभी से निवेदन है कि यदि आपके पास महाशय धर्मपाल जी से सम्बन्धित कोई लेख/सूचना/स्मृति चित्र/कविता/संस्मरण/पत्र व्यवहार या आपके यहां उनके नाम से लगा कोई शिलालेख आदि हो तो कृपया 'महाशय धर्मपाल अभिनन्दन ग्रंथ समिति' के नाम 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 के पते पर तत्काल प्रेषित करने की कृपा करें जिससे आपके द्वारा प्रेषित सामग्री को ग्रन्थ में स्थान दिया जा सके। आप अपनी प्रकाशन सामग्री समिति को aryasabha@yahoo.com पर ईमेल भी कर सकते हैं।

**-सचिव, महाशय धर्मपाल अभिनन्दन ग्रंथ समिति**

## 'दिल्ली के आर्य समाजों का इतिहास' ग्रन्थ प्रकाशन कार्य प्रगति की ओर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से प्रकाशित होने वाले 'आर्य समाजों का इतिहास' ग्रन्थ का लेखन कार्य प्रगति पर है जिन आर्य सामजों ने अभी तक अपने समाज का इतिहास दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को नहीं भेजा है व शीघ्र अतिशीघ्र अपने समाज का इतिहास स्पष्ट अक्षरों में लिखकर 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली के पते पर प्रेषित करें, जिससे उन्हें भी इस ग्रन्थ में प्रकाशित किया जा सके। **-विनय आर्य, महामंत्री**

## आर्य उपदेशक एवं पुरोहित प्रशिक्षण शिविर

आर्य समाज प्रीत विहार दिल्ली-110092 के तत्त्वावधान में दिनांक 1 से 16 अप्रैल 2016 तक आर्य उपदेशक एवं पुरोहित प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। शिविरोपरांत सफल शिविरार्थियों को निश्चित सेवा का अवसर दिया जाएगा। शिविरार्थी बनने के लिए गृहकार्य- 1) दूरभाष 011-22504658 पर प्रात: 8:30 से सायं 6 बजे के मध्य समय लेकर अपना अस्थाई पंजीकरण कराना, 2) पंजीकरण शुल्क 500 रुपये भेजने की व्यवस्था करना, 3) संस्कार विधि व सत्यार्थ प्रकाश, ऋतु अनुसार बिस्तर-वस्त्र साथ लाना, 4) 1 अप्रैल को शाम तक शिविर स्थल पर पहुंचना, 5) प्रचारक बनने हेतु मन को तैयार करना।

**- आयोजक सुरेंद्र कुमार रैली, प्रधान**

## चुनाव समाचार

### आर्य समाज ग्रेटर कैलाश पार्ट-2

प्रधान - **श्री प्रिय व्रत**

मंत्री - **श्री अरुण खुल्लर**

कोषाध्यक्ष - **श्री आर. एन. सलूजा**

*प्रतिष्ठा में,*

## आर्य सन्देश के सम्मानीय सदस्यों से निवेदन

आर्य सन्देश के समस्त सम्मानीय सदस्यों की सूचनार्थ निवेदन है कि आर्य सन्देश अपने समस्त सदस्यों का डाटा अपडेट कर रहा है। अत: आप अपना मोबाईल नम्बर एवं ईमेल पता, सदस्य संख्या के साथ शीघ्र अतिशीघ्र भेजने की कृपा करें जिससे आपका नाम रिकार्ड में अपडेट किया जा सके। -सम्पादक

### सदस्यता शुल्क भेजें

आर्य सन्देश के समस्त वार्षिक सदस्यों से निवेदन है कि वे अपना वार्षिक शुल्क भी तत्काल भिजवाने की कृपा करें जिससे उनको आर्य सन्देश नियमित प्राप्त होता रहे। शुल्क संबंधी जानकारी के लिए व्यस्थापक श्री एस.पी. सिंह (9540040324) अथवा श्री जियालाल (9650183336) से संपर्क करें। -सम्पादक


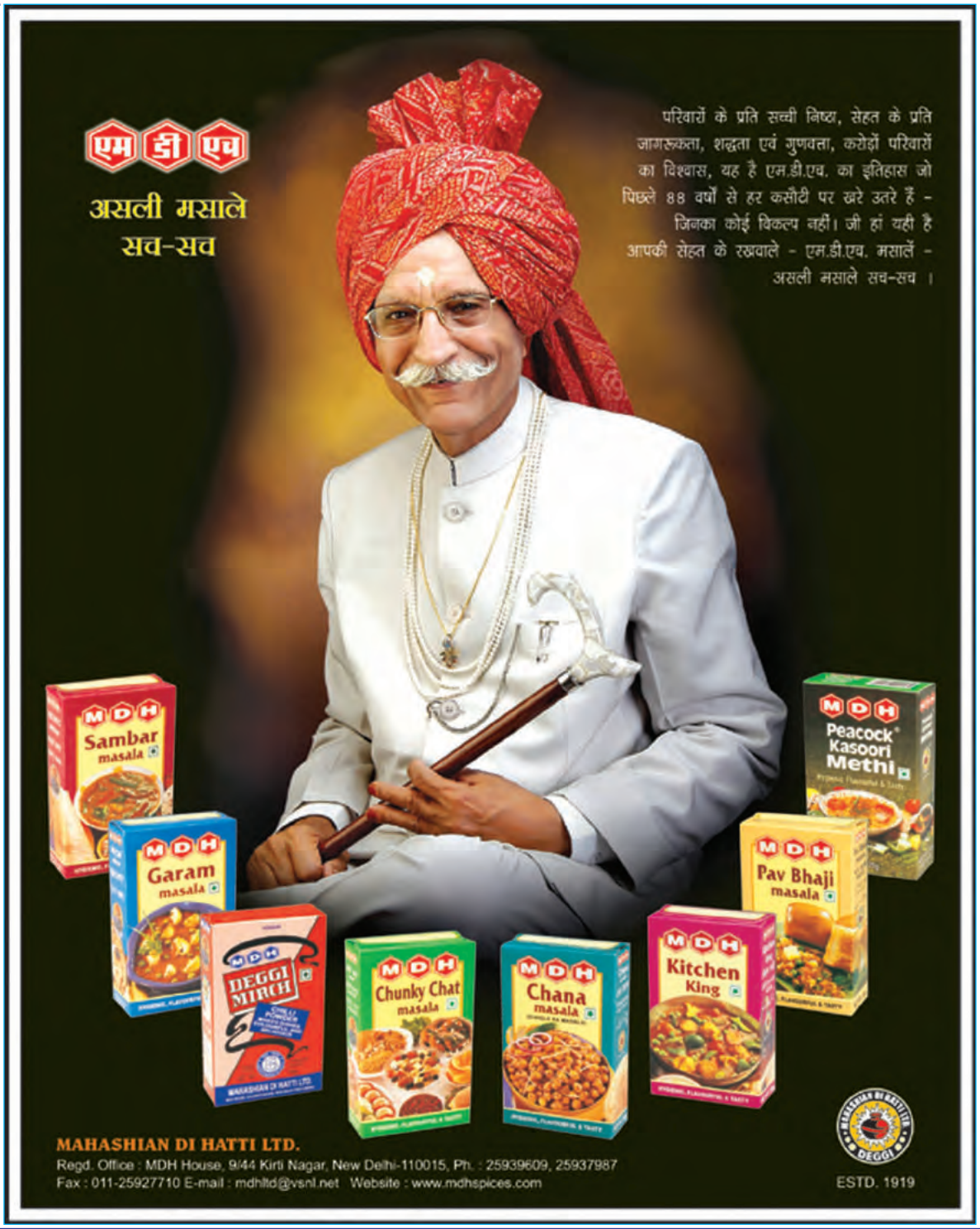



साप्ताहिक आर्य सन्देश में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धांतिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2 नारायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, फोन:23360150, 23365959, E-mail: aryasabha@yahoo.com; Web: thearyasamaj.com से प्रकाशित

सम्पादक: धर्मपाल आर्य सह सम्पादक: विनय आर्य व्यवस्थापक: शिव कुमार मदान सह व्यवस्थापक: आर्य डॉ. ओम प्रकाश भटनागर, एस.पी. सिंह